E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

आसियान देशों में वाल्मीकि रामायण: एक महोत्सव

संदीप नरवाल

पीएचडी शोधार्थी

इग्नू विश्वविद्यालय

Paper Rcevied date

05/06/2025

Paper date Publishing Date

10/06/2025

DOI

https://doi.org/10.5281/zenodo.15814736

IMPACT FACTOR 5.924

संस्कृत वाङ्मय में महर्षि वाल्मीकिकृत आदिकाव्य रामायण एक उपजीव्य ग्रन्थ के रूप में प्रसिद्ध है। इसके रचियता आचार्य वाल्मीकि आदिकवि के रूप में जाने जाते हैं

मा निषाद्। प्रतिष्ठामत्वमगमः शाश्वतीः समाः
यत्क्रौञ्च मिथुनादेकमवधी काममोहितम्।'

यह श्लोक रामायण का मुख्यधार है जिसमें कामवासना में लिप्त क्रौञ्चयुगल में से नर क्रौञ्च की व्याध द्वारा हत्या और मादा के करूण विलाप प्रभृति निर्मम दृश्य को देखकर करूणा-सागर महर्षि वाल्मीकि के हृदय वेदना अनुष्टुप छन्द में निबंद्ध एक श्लोक के रूप में सहज ही फूट पड़ी। इस प्रकार करूण रस प्रधान रामायण का आदिकाव्य के रूप में सर्जन हुआ।

वाचस्पति गेरोला ने वाल्मीकि को आदिकवि, महाकवि, धर्माचार्य, सामाजिक जीवन स्तर के ज्ञात एवं एक गम्भीर आलोचक कहा है। रामायण संस्कृत भाषा के काव्यों में सबसे प्रथम रचना मानी जाती है। अब वर्तमान काल में लगभग सभी आसियान समूह के राष्ट्र में रामायण एक महोत्सव के रूप में मनाई जाती है। जिसमें इण्डोनेशिया (मालया), मलेशिया जावा, ब्रुनेई, थाईलैण्ड (जिसे, स्यामदेश) वियतनाम (भाईदेश) कम्बोडिया, लाओस, म्यामार इत्यादि दक्षिण पूर्वी एशियाई के सभी देश शामिल है।

पुरातन् काल में आसियान द्वीपपुञ्जों में हिन्दु उपनिवेशों के स्थापित किये जाने से सम्बन्धित भारतीय स्त्रोतों का नितांत अभाव है। जो भी सूचनाएँ प्राप्त होती है वह चीनी, तिब्बती, लेखकों द्वारा प्रकाश में लाई गई रचनाओं से मिलती है।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

चीनी और तिब्बती लेखकों की कृतियाँ तथा टोलमी के भूगोल से ऐसी सूचनाओं के आकड़ें प्राप्त होते है। जो प्राचीन भारत और आसियान के संबन्ध को ईसा पू. बताते है।

इन द्वीपपुञ्जों पर हिन्दु सभ्यता एवं संस्कृति का विकास कब और कैसे हुआ? और यहाँ होना वाला रामायण महोत्सव विचारणीय विषय है।

भूगोलशास्त्री पेरीप्लस तथा पुरातत्व की खोजों से विदित होता है कि कावेरी नदी पर विशाल बन्दरगाह ताम्रलिप्ति या गङ्गा के दक्षिणतम छोर पर तम्लूक तथा नर्वदा नदी पर भरूकच्छ (भड़ौच) और आज कल बम्बई के सन्निकट स्थित सूर्यारक या सोपरा नामक बन्दरगाहे स्थित थी। जहाँ स्वर्ण भूमि कहे जाने वाले देश आज कल के दक्षिण पूर्वी एशिया के निवासी भारतीयों के साथ व्यापारिक संबंध रखते थे। जिसमें अधिकांश मलाया इण्डोनेशिया प्रायद्वीप के लोग थे।

कोएडसे के मतानुसार फोउनन के जन्मदाता तथा उस राज्य में हिन्दु धर्म के संस्थापक पुरूष कौण्डियं गौत्र के ब्राह्मण थे। कौण्डिन्य ब्राह्मण वंश का उद्भव उत्तर भारत में हुआ था। किन्तु दक्षिणी भारत में यह वंश अत्याधिक प्रभावशाली था। यह एक व्यापारी वर्ग था। जिसने धीरे-धीरे पाण्ड्य वंश के साथ चम्पा, कम्बोडिया और इण्डोनेशिया जनसमुदाय में शैव सम्प्रदाय का उदय किया ।

इण्डोनेशिया के समुद्री व्यापार के माध्यम से हिन्दू सभ्यता का विस्तार अत्यन्त तीव रूप से ब्राह्मण वर्ग, शिल्पी, सैनिक, व्यापारी, आक्रमणकारी तथा अन्य भारतीय जिनका मूलतः व्यापार से कोई संबंध नहीं था, वे भी इन द्वीपपुञ्जों में (आसियान) देशों में उसी प्रकार गए जैसे कि व्यापारी । इन लोगों ने अपनी सभ्यता, संस्कृति और धर्म का प्रचार भी उन देशों में किया।

इस सन्दर्भ में सर्वप्रथम हम जावायी गाथा " अजिशंक" को समझना होगा जिसमें 'त्रित्रस्त" नामक पण्डित ब्राह्मण द्वारा संस्कृत शक संवत् चलाया जाने की चर्चा की गई है। ईसा की 400 शताब्दी तक संस्कृत वाङ्गमय का इण्डोनेशिया द्वीप पुञ्जों के कुछ भागों में रामायण और महाभारत का प्रभाव तेजी से फैला । तथा दक्षिण पूर्वी एशियाई देश अब हिन्दू रीति-रिवाजों में अटूट विश्वास एवं श्रद्धा रखने लगे।

राम लक्ष्मौ भ्रातरौ नमस्कृत्वा सितासितौ ।

वने तस्मिन् विचरन्तौ सीतां च जनकात्मजाम्।।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

धन्यं माङ्गल्यं आयुष्यमलक्ष्मीकलिनाशम् ।

रामायणं प्रवक्ष्यामि मातृकाक्षरयोजितम् ।।'

उपरिलिखित दो श्लोक 'संक्षिप्त रामायण' के उदाहरण है इसे 'चरित्र रामायण' भी कहते है यह बालिद्वीप में सुरक्षित रखा हुई है संस्कृत में यह ' राम चरित्र' है।

5वी शताब्दी के फनन शिलालेखों से दक्षिण पूर्व एशिया में रामायण के विषय में जानकारी प्राप्त होती हैं।

7वीं शताब्दी में वियतनाम के टा-के-यू नामक चरम मंदिर में रामायण से संबन्धित चित्रकारी की गई है।

9वीं शताब्दी के अंत तक रामायण का प्रभाव इंडोनेशिया से जावा के कुछ भागों में पूर्ण रूप से प्रसारित हो चुका था। यह मध्य जावा में प्रबानन मंदिरों की दिवारों पर 900 ई. पू. के निकट उत्कीर्ण कराई गई गई अनोखी श्रृंखला को दिखाता है।

आज भी इस बालि द्वीप में श्री राम की कथा धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन का एक मुख्य स्तम्भ मानी है।

जावा प्रायद्वीप की छाया कठपुतली रङ्गमंच की परम्परा लगभग हजार वर्षों से जावायी लोक-मनोरंजन के लिए दिखाई जाती है और ये लघु कहानियाँ एवं लोक कथाएँ जो कि कठपुतली रङ्गमंच पर प्रदर्शित की जाती है इन्हें रामायण एवं महाभारत के भारतीय महाकाव्य से उद्धृत किया गया है। जबकि इसके पात्रों और संवाद मूल रूप से भारतीय होती है यह सम्पूर्ण रूप से भारतीय नाट्य शैली के उदाहरण प्रस्तुत करता है।

12वीं शताब्दी में राम और रावण के श्री लंका युद्ध की एक उत्कृष्ट श्रृंखला कंबोडिया के अङ्गकोर वार नामक मंदिर में मिलती है। तत्कालीन समय में रामायण की पत्थर की मूर्तियां म्यामार में भी प्राप्त हुई ।

1347 में थाईलैण्ड की पुरानी राजधानी अयोदा कही गई हैं जो अयोध्या शब्द से उत्पन्न होता है यह राम की जन्मस्थली और थाईलैण्ड के राजा को राम ही पुकारा जाता है इस महाकाव्य को गद्य और पद्य दोनों रूपों में नाटकीय व्यवहार में लिखा गया है।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

21वीं सदी में भी इण्डोनेशियाई कॉमिक्स, बाल मनोरंजन हेतु रामायण प्रकाशित की जाती है। इस प्रकार से रामायण ने शताब्दियों से दक्षिण पूर्व एशियाई में एक साहित्यिक रीति-रिवाजों के रूप में अपनी स्थिति बनाए रखी।

इसी प्रकार थाईलैण्ड में रामायण की लोकप्रियता इस हद तक है कि वहाँ 'रामायकन' वाल्मीकिकृत रामायण का एक थाई संस्करण है जिसे थाईलैण्ड का राष्ट्रीय महाकाव्य माना जाता है जिसका थाई साहित्य और संस्कृति पर गहरा प्रभाव हैं यद्यपि थाई 'रामामकन' में अधिकतर प्रकरण वाल्मीकि रामायण के समान ही है किन्तु वहाँ हनुमान को अधिक महत्व दिया गया है।

राम-कथाएँ दक्षिण-पूर्वी एशिया में नृत्य-नॉटक, संगीत, कठपुतली और छायाङ्क रङ्गमंच पर थाई, खमेर, लाओं; मलय, जावा; बालि इत्यादि द्वीपसमूहों में दिखाई जाती है।

वर्तमान काल में आसियान समूह में सम्मिलित लगभग सभी देशों में से अधिकतर देश पूर्णतः मुस्लिम है या बौद्ध धर्म को मानने वाले है तथापि इनकी संस्कृति व परम्परा में आज भी हमें रामायण कालीन संस्कृति व परम्परा की झलक साफ देखते को मिलती है। जैसे इण्डोनेशिया देश पूर्णत: मुस्लिम होने के बाद भी भगवान राम को ही अपने पूर्वज के रूप में स्वीकार करता है। और वहां प्रत्येक वर्ष 1 महीने की रामलीला का आयोजन होता है। जिसका उल्लेख भारत के पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने अपने एक वक्तव्य में विस्तारपूर्वक किया है।

निष्कर्ष—

रामायण महाकाव्य की प्रत्येक प्रस्तुति इसकी समकालीनता इसकी वास्तविकता और इसकी कई स्तरों की प्रेरणा एवम् प्रतीक की पहचान है। रामायण के विचार और आदर्श अनगिनत रूपों में फूले-फले हैं।

दशरथ पुत्र श्री राम और आदि कवि वाल्मीकि की रचनात्मक प्रतिभा से अन्तरहीन पुनर्व्याख्या से रामायण ने सदियों देशों, संस्कृतियों भाषाओं, दर्शन और कला इत्यादि रूपों में यात्रा की।

बौद्ध एवं जैन धर्म के साथ-साथ, रामायण ने भारत में ही नही अपित सभी आसियान देशों में एक मजबूत सांस्कृतिक संबंध बनाया हैं आसियान देशों में, महाकाव्य रामायण के चित्रण से हमारी पौराणिक कथाओं और लोक कथाओं के आत्मसात्कार के माध्यम से आसियान-भारत के संबंधों को एकीकरण करके एक

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

शक्तिशाली संकेत समझा जा सकता है। रामायण के विभिन्न निर्वचन जो रामलीला (प्रदर्शन कलाओं) के माध्यम से व्यक्त होते है हमारी प्राचीन संस्कृति की साझा विरासत का अभिन्न अङ्ग है। भारत और आसियान प्रभृति देशों में रामायण महोत्सव नृत्य रूपों को नाट्य रूपान्तरों में प्रस्तुति करण करके आपसी संबंधों को संस्कृतिक रूप से आत्मसात करके भविष्य के संबंधों को सुदृढ़ बनाने वाला है।

दक्षिण-पूर्वी एशियाई देशों में राष्ट्रों का संघ आसियान है इस में इण्डोनेशिया, सिंगापुर, फिलीपीन्स, मलेशिया, प्राचीन (मालया) ब्रुनेई, थाईलैण्ड (भाई देश, स्याम देश) कम्बोडिया, लाओस, म्यामार और वियतनाम शामिल है।

आसियान-भारत ने अपने प्राचीन संबंधों को एक समकालीन तालमेल में बैठाकर सक्रिय कर दिया है इसलिए भारत में पहली बार सभी आसियान देशों के राष्ट्र प्रमुख नई दिल्ली गणतंत्र दिवस परेड में विशेष सम्मानीय अतिथि आदर सत्कार हेतु आमंत्रित किए जायेंगे। ताकि वे एशिया के पुनरूत्थान में प्रेरणा शक्ति बन सके। वाणिज्य, संबद्धता और संस्कृति हमारे रणनीति संबंधों को बढ़ाने हेतु आसियान गतिविधियों की एक विस्तृत श्रृंखला के आयोजन से भारतवर्ष की संस्कृति को आगे बढ़ाया जा सकता है।

सन्दर्भ-सूची-

1. मिश्र, रमानाथ, भारतीय मूर्तिकला का इतिहास, ग्रन्थ शिल्पी प्रकाशन,

2.दिल्ली -2002 निरंजन, अलख पाण्डेय " इण्डोनेशिया में संस्कृत", सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, प्रकाशन, वाराणसी-2001, Vol-36.

3.डॉ. सूर्यनारायण, '"इण्डोनेशिया में भारतीय सांस्कृतिक प्रभाव", Vol-9.

4.Awashi Induya, " Ramayana Performances in India and South-East Asian", India Horizons, Vol-49.